'पॅट्रिक ब्रॅग्स'

लिफ्टसे बाहर निकला . सामनेके नोटीस बोर्डपर नया कागज देखा . बडा अक्षर . लाल स्याही . दो चार लाइनें . चंद शब्द . 'एक महिना बाहरगाँव जा रहा हूँ . कोलोनीवालोंको थोडी असुविधा होगी . माफी चाहता हूँ . काम होते ही लौट रहा हूँ' . यह सूचना खास कमिटी मेंबर्स और कोलोनीवालोंके लिये . नीचे हस्ताक्षर . 'पॅट्रिक ब्रॅग्स' . पढतेही मनमे आया - अरे ये तो अपना पॅट्रिक! उसका हस्ताक्षर पैंतीस सालोंमें पहली बार देखा . उसके साथ जुडे 'ब्रॅग्स' नामका साक्षात्कार भी आजही हुआ .

'पॅट्रिक'! दक्षिण मुंबईके कुलाबामें टी . आय . एफ . आर . एवं हौसिंग कॉलोनीके सफाई विभागका स्वयंघोषित डिरेक्टर . डॉ . होमी भाभाजीके जमानेका . काली या नीली हाफ पँट . हमेशा पेटके नीचे . कमरपर . काम करते समय खुला बदन . बाकी समय हाफ शर्ट . उसके बटन खुले . एक हाथमे पानीसे लबालब भरी बाल्टी . दूसरे हाथमे झाडू . या फिर लंबी काठीवाला लादी पोंछनेका मॉप . सुबहके समय हमेशा कामकी गडबडीमे . फिरभी मुँहमें बसी मशीनगन लगातार शुरू . नॉनस्टॉप बकबक . कोई सुने ना सुने . बोलते बोलते दस मालेकी सीढीयाँ, बरामदे साफ . सब कचरा बडे डिब्बोमें . ट्रॉलीपर सवार डिब्बोंको घसीटते हुए समुंदरकी तरफ कूडादानकी ओर प्रस्थान . कोई साथ हो ना हो . अपनी धुनमें इसका काम जारी . फिर कँटिनमे नाष्टा . गरमागरम चायकी प्यालीमें अमूल बटरकी छोटी टिक्की . वो पिघलनेके बाद उपरके पारदर्शी हिस्सेमे पूरा बनपाव डूबोके बडी चावसे खाना . उसके बाद ऑफिसका काम . वो भी कॉस्मेटिक मेंटेनन्समे . यानिके सफाई विभागमे . काम ऐसा की 'वर्क इफिशियन्सी' या कार्य तत्परताका आदर्श नमुना . कोई प्रशंसा करे या निंदा . ये तो हमेशा वर्कोहोलिक .

ऑफिसमे दो बार प्रमुख लिफ्टसकी सफाई . वो भी पूरी लगनसे . दिलोजानसे . ब्रासो की बोतलें लेकर पीतलके बार, हँडेल्स और बटनकी घिसाई . उसमे अपना चेहेरा दिखाई देनेतक . कितना भी समय लगे . कोई पूछे तो 'आपको मालूम नही . यहींपर भाभासाबने पीठपर हाथ रखके कहा जो था - पॅट्रिक . कल मैं रहूँ ना रहूँ . ये लिफ्ट ऐसीही चमकनी चाहिए . ये बोलके चले गए तो वापिस आएच नही . कोई बोलते की उनकी बॉडी अभीतक मिली नही . कभी वापिस आ गए तो लिफ्ट चमकीली होनी चाहिए ना'? इस एकमात्र कामसे वो काफी खुष रहता था . सेवामे था तबतक यह काम किसी औरको करने नही देता . क्या मजाल कि कोई कोशिश भी करें .

सायंकालमे फिर एक बार कोलोनीमे सेवाके लिये हाजीर . कॉमन बाथरूमसे होज पाईप निकालके पानीसे लादी धो डालनेका बडा कार्यक्रम . पानीका राशन हो या कटौती . उसे बोलनेकी किसीकी हिम्मत नही . फिर परिसरमे खेलते बच्चोंपर नजर रखके प्रोफेसर लोगोंकी मोटार गाडीयोंकी सफाई . कामके समय औरोंसे फालतू बातें करना, गपशप लगाना बिलकुल नापसंद . दोपहर क्या खाता था खुद जाने . रातको दो टिफिन भरके खाना . नेव्ही कँटीनसे लाता और साथमे एक चपटी बोतल . दो घूँट पेटमे जानेके बाद बडी खुशी . दिनभरके कामसे और गंदगीकी बू से थका शरीर एकदम रिलॅक्स . खानेमे मछली या मटनका टुकडा जरूरी . पेटभर अच्छे भोजनके बाद सीढीयोंपर या बरामदेमे तमाखूकी गोली लगाके थोडा

pdfMachine
Is a pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, if you can print from a windows application you can use pdfMachine.
Get yours now!

विश्राम . डिनरके बाद कॉरिडारमे टहलने निकलो तो इसका वार्तारूपी रेडिओ सुरू हो जानेकी गॅरंटी . जोरसे बातें करते हुए पीछे पीछे . सुननेवालेको बस 'हाँ हाँ' की रट लगानेका और बीचमें चाबी भरते रहनेकाही काम . कौन प्रोफेसर फॉरिन गया है, कौन वापिस आ गया है . मुझे इंपोर्टेड कपडा देके 'विलायती' कैसे पिलायी . ये सब सुनकर अपने जनरल नॉलेजमे बढोतरी . इतना ही नही . किसने नया मकान ख़रीद लिया है . कहाँ है . कितनी पूँजी लगायी . आज उसकी कीमत कितनी है . किराया कितना मिलता है . किसकी बेटी किसके साथ घूमती फिरती है . बापको कैसे मालूम नही . ऐसे कई चित्तवेधक वार्तालाप . इन घटनाओंकी संख्या उस दिनके मूडपर, पेटमे पहुँचे द्रवपदार्थकी मात्रा एवं उसके अमलपर निर्भर . अगर कोई श्रोता ना मिले तो मनमे आनेवाले किसीभी गानेको अपनी बेसुरीली आवाजमे बिनधास्त गायन . या फिर बेवजह जोर जोरसे हँसनेका कार्यक्रम . देर रात पूरी थकानके बाद बेसमेंटमे बिस्तर . लेटतेही गहरी नींदका मालिक . एक लयमे घूरना चालू . साथमें पत्रेकी छोटीसी पेटी . उसकी सारी दुनिया समेटती हुअी . गर्मीयोंके दिन बिस्तर दसवीं मंजिलपर . टेरेसमे .

यह दिनक्रम पचास सालसे जारी है . पंछी अकेला . पंद्रह बरसका था जब केरलासे मुंबई आया . अभिजात मराठी यानिके अव्वल दर्जेकी गालियोंके साथ सीख ली . ख़ाली बोलनेके लिये . बेसमेंटमे या किसीके भी घरमे कोई भी छोटा मोटा समारोह हो, बुलानेपर घरके सदस्यसे भी ज्यादा मन लगाके काम . चायपानीके इंतजामके साथ बादकी सफाईमे भी शामील . कुछ बोलने या बतानेकी जरूरतही नही . मानो सारा जिम्मा उसीपर . उसीके घरका कार्य .

कई साल पहलेकी बात . बरसातके दिन थे . आठवीं मंजिलके मकानमे निवास था . तेज रफ्तारसे हवा चल रही थी . अचानक धमाका हो गया . ड्राईंग रूमकी बडी काँच टूट गिरी . छोटे मोटे टुकडे पूरे घरमें बिख़र पडे . बारिशभी चालू हो गयी . इत्तफाकसे ये कॉरिडॉरमेही काम कर रहा था . आवाज सुनतेही दौडके चला आया . घंटी मार दी . बिख़रे हुए ढेर सारे टुकडोंके बीचमेसे रास्ता निकालके आहिस्ता आहिस्ता दरवाजेतक पहुँचा . सामनेका नजारा देख़के बोल पडा, 'हर एक घरमे एक बार ये होता ही है . उसके बादही लोगोंको कुछ अक्ल आती है . आप चिंता ना करें . मैं हूँ ना . सब लोग पलंगपर जाकर बैठिये . अभी आया . सचमुच झाडू, बाल्टी, कपडा और मॉप लेके हाजिर हो गया . बोलते बोलते पूरा कमरा साफ करके गया . टूटे हुए काँचका नामोनिशान भी नही . और यह सब बडी सहजतासे . लेने देनेके मामलेमे कोई भी शिकायत या अवास्तव अपेक्षा नही . जो मिला उसीमे ख़ुशी . कोलोनीकी कामवाली औरतें या सफाई कामगार अगर तनख़ा बढानेकी, काम बंद करनेकी या हडतालकी भाषा करें तो उनको ही डाँट - 'काम करो पहिला इमानदारीसे और सही ढंगसे . फिर देख़ता हूँ कि साब लोग कैसै नही पगार बढाते' . उसके आगे सबकी बोलती बंद .

लेकिन पॅट्रिक की सबसे बडी रूची और ख़ुशी थी स्वतंत्रता और गणतंत्रदिनमे . तिरंगा लहरानेके और राष्ट्रगीत गायनके समारोहमे . ख़ास करके ध्वजस्तंभकी मरम्मत, चबुतरेको और फ्लॅगपोलका सफेद ऑयल पेंट, तिरंगेको इस्त्री और एक दिन पहले पूरी रंगीन तालीम . इन मामलोंमे वो काफी गंभीर था . कमिटीका जो भी कोई चेअरमन हो, एक हप्तेसे उसके पीछे पडता . फिर समारोहके दिन ध्वजारोहण

pdfMachine
Is a pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, if you can print from a windows application you can use pdfMachine.
Get yours now!

और राष्ट्रगीतके समूहगान के बाद गायब . श्यामको फिर ध्वज उतारते समय फिर आगमन . बहुत बार अकेला . ध्वजको सम्हालके, सम्मानसे उतारके ठीक जगह पहुँचानेके बादही उसका काम पूरा हो जाता .

आदमी बिलकुल खुषमिजाज . इसीलिये संस्था एवं कोलोनीके सभी छोटे बडे लोगोंसे परिचित . बच्चोंका 'पॅट्रिक अंकल' . उनमें अपना खोया हुआ बचपन ढूँढता था . उन्होंने कितना भी चिढाया, मस्करी की तो भी गुस्सेपर कभी नही उतरता . अगर किसीने कागजका ध्वज जमीनपर केंक दिया तो कान पकडकर उठानेको कहता . खेलते समय कोई गिर गया, चोट आ गयी तो तुरंत जाके सम्हालता था . प्रथमोपचार करता था . उस नन्हेके घर खबर होनेके पहले जरूरत पडे तो डाक्तरके पासभी लेके जाता . कोलोनी और होस्टेल की कई पिढीयाँ इसकी आँखोंके सामने बडी होकर शादी ब्याह करके या नौकरीके लिये देश विदेश चली गयी . वे लोग उसे भूलते नही . कभी छुटीपर या कँपस पर आतेही उसे मिल लेते हैं . उसके लिये कुछ ना कुछ तो लेके आते हैं . फेसबुक और इंटरनेटकी माध्यमसे उसकी खबर एक दूसरेको देते रहते हैं .

पॅट्रिक आज सत्तर बरस पार कर चुका है . फिर भी उसे 'आप' संबोधनसे बुलानेवाले मायनॉरिटीमे हैं . सेवानिवृत्त होकर दस ग्यारह साल पेन्शन खा रहा है . और तीस सालतक पेन्शनका पैसा पानेकी उम्मीद रखता है . सेवानिवृत्तीके बाद भी उसी बेसमेंटमे रहता है . हालहीमे उसके कमरकी हडडी बदलनेका बडा ऑपरेशन जसलोकमे हुआ . पंद्रह दिनके निवासमे सबका दोस्त बन गया . 'वहाँ बहोत काम पडे हैं . ये नये लडके कुछ कामके नही हैं . मुझेही जाना चाहिये' ऐसा बहाना बनाके और डागदर लोगोंसे झगडा करके जल्दही बाहर निकला . वापस आतेही काम शुरू . थकान शब्द शायद उसे मालूम नही . नब्बे सालकी बूढी माँ और पचहत्तर सालकी बहन केरलामे एक वृद्धाश्रममे . यहाँसे मनीआर्डरसे पैसे भेजता है . हालहीमें माँ चल बसी . अभी बहनको मिलने गया था . बदलापूरमे उसका छोटा फ्लॅट है . महिनेमे एक बार सुबह जाके सफाई करके श्यामको अंधेरा होनेसे पहले वापिस आता है . बिल्डिंग कमिटी उसे बदलापूर जाकर आराम करनेको कहती है, तनखा बंद कर देती है . फिर भी ये जानेको तैय्यार नही . उसकी जान इसी माहौलमे भाभा सावको दिये हुए वचनमे अटक जो गयी है .

डॉ . सुरेश चांदवणकर
२५ जुलै २०११ .
chandvankar.suresh@gmail.com

---

pdfMachine
Is a pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, if you can print from a windows application you can use pdfMachine.
Get yours now!